रोकथाम के उपाय:

कीड़े के अंडो, व सुंडियो और प्रभावित फलो को चुनकर नष्ट कर दें। बगीचे से सभी प्रकार के खरपतवारों को नष्ट कर दें। प्रभावित पौधे के भागों को काटकर नष्ट कर दें। 3 से 4 प्रकाश प्रपंच प्रति हेक्टर की दर से बगीचे में प्रयोग करें। जैव नियंत्रण के लिए ट्राइकोग्रामा चिलोनिस से प्रभावित 100000 अंडो का प्रयोग प्रति हेक्टर की दर से प्रयोग करे।

5. थ्रिप्स (सिरटोथ्रिप्स डोर्सलिस और रहिफीफोरोथ्रिप्स क्रुएँटेटस):

यह कीट थाईसनोपटेरा गण के थ्रिपीडेपरिवार का सदस्य है।

पहचान के लक्षण:

इनके प्रौढ़ का शरीर मुलायम, छोटा, बेलनाकार और इसके ऊपर मोटे व उभरे काले भूरे पंख होते हैं। शिशु छोटे पीले भूरे रंग के होते हैं।

जीवन चक्र:

मादायें सामान्तय अपने जीवन काल में बीन के आकार के लगभग 50 अंडे पत्तियों के नीचे देती हैं और जिनसे 3 से 8 दिनों में छोटे शिशु बाहर आते हैं। ये 2 से 5 दिनों के लिए कोष अवस्था में रहते है।

क्षति के लक्षण:

इसके प्रौढ़ व शिशु दोनों ही पौधों की पत्तियों से रस चूसते रहते है। प्रभावित पत्तिया की नोक भूरे रंग की हो कर मुड़ने लगती है और सुख जाती है। प्रभावित फल भी सुखकर गिरने लगते है। फलो पर भी सफेद चरम रोग दिखाई देता है जिससे उनकी बाजार कीमत भी कम हो जाती है।

रोकथाम के उपाय:

पौधे के चारो तरफ सफाई बनाये रखें। समय से पौधों की कटाई छटाई करें। प्रभावित पौधे के भाग को काटकर नष्ट कर दें। चार से दस नील रंग के चिपचिपे ट्रैप्स का प्रयोग करे।

6. आटेदार कीड़ा (फेरिसिया विर्गटा और स्यूडोकॉकस लीलासिन्स):

यह हेमिप्टेरा गण के स्यूडोकॉकसे परिवार का सदस्य है।

पहचान के लक्षण:

इसकी मादायें पंखहीन, लम्बी बेलनाकार और इनका शरीर सफेद मोमी अवर्ण से ढका होता है। इनके शरीर के अंत में एक जोड़ी लंबे मोमी रेशे निकले रहते है।

जीवन चक्र:

इनकी मादायें समूह में लेकिन मोमी आवरणों में 300 से 400 अंडे देती है। जिनसे 3 से 4 महीनों में छोटे शिशु निकलते हैं। मादायें व नर 3 व 4 बार अपनी त्वचा को निकालती हैं। इसकी मदायें 35 से 60 दिनों तक जीवित रह सकती है जबकि नर एक से दो दिनों तक ही जीवित रह सकते है।

पूंछ कीट की शिशु व प्रौढ़ अवस्थाये अनार के प्रभावित फल

क्षति के लक्षण:

इसके प्रौढ़ व शिशु दोनों ही पौधों की पत्तियों, शाखाओं व फलों से रस चूसते रहते हैं और जिसके कारण फल पकने से पहले ही गिर जाते हैं।

रोकथाम के उपाय:

प्रभावित पौधे के भागों को काटकर नष्ट कर देना चाहिए। पौधे के तने के चारो तरफ चूने का लेप लगाकर पन्नी से बांध देना चाहिए। बगीचे से सभी प्रकार के खरपतवारो को नष्ट कर दें।

विशेष जानकारी हेतु संपर्क करें-

डॉ. एस. एस. सिंह

निदेशक प्रसार शिक्षा

प्रसार शिक्षा निदेशालय

दूरभाष : 789746699

ई-मेल : directorextension.rlbcau@gmail.com

प्रकाशित:

कुलपति

रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय

झाँसी (उ.प्र.) 284003

प्र.शि.नि./त.प्र.सा.-फोल्डर/2021/21

अनार की फसल के प्रमुख कीट एवं उनकी रोकथाम

सुन्दर पाल

सुशील कुमार चतुर्वेदी

प्रसार शिक्षा निदेशालय

रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय

झाँसी 284003 उत्तर प्रदेश (भारत)

Website: www.rlbcau.ac.in

अनार की फसल के प्रमुख कीट एव उनकी रोकथाम–

अनार एक महत्वपूर्ण फल वाली फसल है। जिसको अगस्त या फरवरी–मार्च महीने में सभी प्रकार की मिट्टियों में लगाया जा सकता है, जो कि डेढ़ से दो साल बाद फल देने लगता है। अनार का पौधा आकार में दूसरे फल वृक्षों से छोटा एवं झाड़ीनुमा होता है। यह उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में आसानी से उगाया जाता है। इसकी गणेश, रूबी, अराकता और भगवा प्रमुख प्रजातिया है। भारतवर्ष में इसके उत्पादन में पिछले वर्ष (2016–17) की अपेक्षा 6.9 प्रतिशत की वृद्धि देखी गयी। जबकि इसका कुल क्षेत्र बढ़कर 220,000 हेक्टर हो गया और जिसका मुख्य कारण अधिकतर राज्यों द्वारा इसकी खेती का अपनाया जाना है। भारत में इसकी उत्पादन क्षमता 12.70 टन प्रति हेक्टर है। भारत में महाराष्ट्र, अकेले ही 90 प्रतिशत अनार का उत्पादन करता है और इसके बाद कर्नाटका, मध्य प्रदेश, गुजरात, तमिलनाडु और आंध्रप्रदेश का नंबर आता है। महाराष्ट्र और गुजरात में अनार का पौधा पूरे वर्ष फल पैदा करता है। बुंदेलखंड के लिए उपयुक्त प्रजातियाँ जैसे कि गणेश, जी–137ए मृदुला, अर्कटा, भगवा, सुपर भगवा आदि। अनार की फसल में अनार की तितली, तना बेधक, फल बेधक, फल का शलभ, सफेद मक्खी, तना छेदक, थ्रिप्स, माहू, आटे दार कीड़ा, दीमक आदि कीड़ो का आक्रमण होता है।

1. अनार की तितली (डयुडोरिक्ष आइसोक्रेटेस):

यह गण लेपिडोप्टेरा की लाईकनिड़े परिवार का सदस्य है।

पहचान के लक्षण:

तितलिया नीले भूरे रंग की होती है। इसकी सुंडिया भूरे रंग की छोटी लेकिन मोटे आकार की और शरीर छोटे–2 बालो से ढका होती है।

जीवन चक्र:

मादायें नई पत्तियों, डंठल और फूलो की कलियों पर अलग अलग अंडे देती है। इसकी सुंडिया 18 से 47 दिनों तक बनी रहती है। कोष अवस्था की अवधि 7 से 34 दिनों की होती है और इसका निर्माण क्षतिग्रस्त फलो के अन्दर या डंठल से जुड़ा होता है। यह कीट अपना जीवन चक्र 2 महीने में पूरा करता है।

क्षति के लक्षण:

इसकी सुंड़िया युवा फलो में छेद कर फल से लुगदी और बीजो को खाकर नष्ट कर देती है जिसके कारण फलो में सडन होने लगती है और प्रभावित फल पेड़ से नीचे गिर जाते है।

रोकथाम के उपाय:

कीड़े के अंडो, व सुंड़ियों और प्रभावित फलो को चुनकर नष्ट कर दें। बगीचे से सभी प्रकार के खरपतवारों को नष्ट कर दें। प्रभावित पौधे के भागों को कटकर नष्ट कर दें। 3 से 4 प्रकाश प्रपंच प्रति हेक्टर की दर से बगीचे में प्रयोग करें। जैव नियंत्रण के लिए ट्राइकोग्रामा चिलोनिस से प्रभावित 100000 अंडों का प्रयोग प्रति हेक्टर की दर से प्रयोग करें।

वयस्क तितली — तितली की इल्ली अवस्था — प्रभावित फल

2. तना छेदक (कॉएलोस्टर्ना सपिनाटर):

यह गण कोलिओप्टेरा की क्रेम्बिसिड़े परिवार का सदस्य है।

पहचान के लक्षण:

भृंग का शरीर पीले भूरे रंग का जिसके ऊपर 30 से 35 मिलीमीटर लंबे हल्के भूरे रंग के पंख होते है। शरीर के किनारे और पैर नील रंग के होते है।

जीवन चक्र:

मादायें पेड़ के तने में या छाल के नीचे लगभग 20 से 40 अंडे देती है। अंडे से निकली घुन की लम्बाई ¼ इंच होती है जो कि परिपक्व अवस्था में लगभग 2.5 इंच के हो जाते है। शुरुआत में ये घुन दिये गये स्थान के आसपास ही मुलायम ऊतकों को खाना शुरू करते हैं फिर तने और जड़ों में छेद बनाकर अन्दर ही अन्दर खाते रहते हैं। ये 9 से 10 महीनों तक इसमें बने रहते हैं और फिर 16 से 18 दिनों के लिए कोष अवस्था में चले जाते है। इसके भृंग 45 से 60 दिनों तक जीवित रहते हैं। इस प्रकार से एक वर्ष में केवल एक ही पीढ़ी को पूरा कर पाते हैं।

क्षति के लक्षण:

इसका घुन पौधे के तने को छेद कर मुलायम भागो को खाते है। इसके भृंग दिन के समय सक्रिय रहते है और नई अंकुरित हरी छाल को कुतर कर खाते है। पौधे के तने पर छेद्रो की उपस्थिति व उनके पास घुन का मलमूत्र और सूखी लकड़ी का बुरादा इसकी उपस्थिति को दर्शाती है।

रोकथाम के उपाय:

प्रभावित पौधों के तनो बने छेदों में आयरन के तार को डालकर सुंडी को मार देना चाहिए। प्रभीवित शाखाओ व फलो को काटकर व तोड़कर जला देना चाहिए।

3. सफेद मक्खी (सिफोरिनस फिल्लग्रेए):

यह कीट हेमिप्टेरा गण के अलेग्रोडिडाए परिवार का सदस्य है।

पहचान के लक्षण:

अंडे पीले, लंबे, अंडाकार और एक छोटे डंठल के साथ होते है। इसके शिशु सफेद–पीले रंग के होते है जबकि प्रोढ का शरीर पुला जीके ऊपर पीले रंग के पंख होते है।

जीवन चक्र:

प्रौढ़ मादाये पत्तियों के निचली सतह पर अंडे देती है जिनसे 3 से 30 दिनों में शिशु बहार आते है जिनका जीवन काल 9 से 18 दिनों तक हो सकता है। कोष अवस्था 2 से 8 दिनों की होती है। इसके प्रोढ 15 से 30 दिनों तक जीवित रहते है।

क्षति के लक्षण:

इसके शिशु और प्रोढ दोनों ही पत्तियों से रस चूसकर नुकसान पहुचाते है। ये दोनों ही एक मीठा स्राव निकालते रहते है और इसके ऊपर फफूंदी का विकास होने के कारण पत्तियों में प्रकाश संश्लेषण की क्रिया प्रभावित होती है। प्रभीवित पत्तिया पीली पड़कर पौधे से गिरने लगती है।

रोकथाम के उपाय:

बगीचे की सफाई रखे। समय से पौधों की कटाई–छटाई करते रहना चाहिए। चार से दस चिपचिपे पीले रंग के ट्रैप प्रति एकड़ प्रयोग करें। जैव नियंत्रण के लिए कोक्सिनेल्ला भृंग की जनसंख्या को खेत में बढ़ायें।

सफेद मक्खी की शिशु व प्रौढ़ अवस्थाएं और प्रभावित पत्तियां

4. फल छेदक (कोनोगेथेस पिकंतीफेरालिस):

यह कीट लेपिडोप्टेरा गण के पाईरौसटिडे परिवार का सदस्य है। पहचान के लक्षण: इसके प्रोढ नारंगी–पीले रंग के पंखो वाले इनके ऊपर काले धब्बे होते है।

जीवन चक्र:

इसकी मादाये अधिकतर शीर्ष पत्तियों के किनारों या पुष्पक्रम पर अंडे देती है। अंडो से 6 से 7 दिनों में एक छोटी लाल भूरे रंग की सुंडी बहार आती है। जिसके शरीर पर धारियां होती हैं और इसकी जीवन अवधि 12 से 16 दिनों की होती है। कोष अवस्था फल के अन्दर कोकून में होती है और जिसकी अवधि 4–7 दिनों की होती है। इसका जीवन चक्र 25 से 33 दिनों में पूरा होता है।

क्षति के लक्षण:

नये फलो पर उपस्थित छेद जोकि सुंडी के मल से बंद होता है और प्रभावित फल परिपक्वता से पहले ही पेड़ से गिर जाते है।